



# एक अगुवा की विश्वास से भरी प्रार्थना

A Leader's Prayer of Faith

## **उद्देश्य (Objective):**

हम सभी को ऐसे संकटों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो असंभव लगते हैं। लेकिन एक अगुवा के रूप में, ऐसे समय में हमारी प्रतिक्रिया ही हमें परिभाषित करती है। इस प्रशिक्षण में हम एक अगुवा की विश्वास से भरी प्रार्थना के महत्वपूर्ण पक्ष को समझते हैं, जो कि 2 राजा 19 में हिजकिय्याह के उदाहरण पर आधारित है।

हम यहाँ तीन-भाग वाली प्रार्थना संरचना को प्रस्तुत करते हैं। एक अगुवा के रूप में, चुनौतियों के प्रति हमारा दृष्टिकोण विश्वास में आधारित और परमेश्वर के उद्देश्य से जुड़ा हुआ होना चाहिए।

## **सारांश (Overview):**

### **1. संकट का सामना करना (Facing Obstacle):**

- उन बाधाओं को स्वीकार करना जो आपकी सामर्थ्य से बाहर हैं।
- हिजकिय्याह का उदाहरण

### **2. तीन-भाग की प्रार्थना: विश्वास के साथ प्रार्थना करना (3-Part Prayer: Praying with Faith):**

- अपने विश्वास को मजबूत करें: परमेश्वर के स्वभाव और उनकी पिछली विश्वासयोग्यता पर ध्यान केंद्रित करें।
- अपने निवेदन को स्पष्ट और सरल रखें।
- अपने निवेदन को परमेश्वर के राज्य के उद्देश्य से जोड़ें ("ताकि...")

### **3. "ताकि..." की सामर्थ्य (The Power of "So That"):**

- "ताकि..." प्रार्थना को केवल व्यक्तिगत ज़रूरत से आगे ले जाकर परमेश्वर की बड़ी योजना से जोड़ता है।
- पवित्र आत्मा इस "ताकि..." को समझने और प्रकट करने में सहायता करता है।

## **शास्त्र सन्दर्भ (Verses Referenced):**

- 2 राजा 19:14
- 2 राजा 19:15
- 2 राजा 19:19
- मत्ती 6:7

## **अध्ययन हेतु प्रश्न (Questions for Further Study):**

1. हिजकिय्याह की प्रार्थना के तरीके में आपको सबसे महत्वपूर्ण बात क्या लगी?

2. जिस प्रकार से हिजकिय्याह ने धमकी भरे पत्र पर प्रतिक्रिया दी, वह आपके चुनौतीपूर्ण समय की प्रतिक्रिया से कैसे भिन्न है?

3. किसी वर्तमान चुनौती के बारे में सोचिए। आप उसमें अपनी प्रार्थना में “ताकि...” का आयाम कैसे जोड़ सकते हैं?

4. अभी आपके जीवन का ऐसा कौन सा क्षेत्र है जहाँ आपको अधिक विश्वास के साथ प्रार्थना करने की ज़रूरत है?

### **अतिरिक्त अध्ययन के लिए शास्त्र (Scripture for Further Study):**

- मरकुस 11:24
- इब्रानियों 11
- भजन संहिता 27
- इफिसियों 3:20–21